IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कबीर के दार्शनिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रमिला (गाँव, डाखाना – बुड़ौली, जिला रेवीड़ी (हरियाणा)

पिन – 123411

स्नातकोत्तर (हिन्दी), UGC – NET

Email – mail2monurohilla@gmail.com

प्रस्तावना :

कबीर अपने समय के क्रांतिकारी युगद्रष्टा थे। यद्यपि इन्होनें कोई दार्शनिक मत प्रस्तुत नहीं किया। तथापि ईश्वरीय शक्ति में प्रेम की भाव–व्यंजना करते हुए उन्होंने ब्रह्म, जीवन जगत तथा माया आदि के बारे में जो विचार व्यक्त किये इन्हीं के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का मूल्यांकन किया जा सकता है। वे प्रधानतः एक भक्त थे, लेकिन भक्ति के अधिकार को वे सामान्य जन तक ले गए। उन्होंने ब्रह्म के निर्गुण स्वरूप को अपनाते हुए उसकी साधना में बाह्याचार और कर्मकांड की सर्वथा उपेक्षा की।

वे जिस साधना पद्धति को विकसित कर रहे थे, वह आम लोगों के जीवन और पहुँच के अनुकूल थी। अपनी साधना पद्धति के विकास के क्रम में कबीर ने अपने समय के सभी धार्मिक संप्रदायों–हिंदु, मुसलमान, सिद्ध नाथ, वैष्णव, शक्ति आदि की मान्यताओं का परीक्षण किया तथा संकीर्णताओं और रूढ़ियों पर प्रहार किया। इसी क्रम में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए हैं उसी से उनकी दार्शनिक मान्यताएँ उभरकर सामने आई।

कबीर के दार्शनिक दृष्टिकोण का आधार उनके काव्य के मुख्य विषय मन, आत्मा, माया मुक्ति जगत इत्यादि में दृष्टिगत होता है।

जिसका विवेचन निम्नलिखित हैः–

1 **ब्रह्म संबंधी दृष्टिकोण : –**

कबीर उच्च कोटि के महात्मा एवं भक्त थे। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था, पर ब्रह्म का अनवेषण करके उससे साक्षात्कार करना यद्यपि कबीरदास को विभिन्न धर्मग्रथों का ज्ञान था लेकिन ब्रह्म के विषय में उन्होने जो विचार व्यक्त किए है वे उनकी स्वानुभूति का परिणाम हैं।

कबीर का ब्रह्म संबंधी ज्ञान उपनिषदों के अद्वैतवाद से प्रभावित है।

कबीर का विचार था कि बह्म के मूल तत्व को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कबीर जी घोषणा करते है कि उस परमतत्त्व को न कोई देख सकता है, न प्राप्त कर सकता है, वह न खाता है, न पीता है, न जीता है, न मरता है। उसका कोई रूप रंग अथवा वेशभूशा नहीं है। वह असीम अनन्त, अनिर्वचनीय, अरूप तथा सर्वव्यापी है। एक स्थल पर वे कहते हैं–

"पानी ही ते हिम भया, हिम है गया बिलाय।
कबीर जो था सो भया, अब कुछ कहा ना जाय।।"

कबीर का ब्रह्म अपार महिमाशाली है। उसकी शक्ति, प्रकाश तथा रूप स्वरूप तक कोई नहीं पहुँच सकता। प्रेमी – प्रमिका का रूपक प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं:–

"बालम आउ हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहैं तुम्हारी नारी, मोको यह संदेहरे।
एकमेक हयै सेज न सौवे तब लागि कैसा स्नेह रे।
अन्न न भावै नींद न आवै, जिह बन धरै न धीररे।
ज्यों कामीं कौ कामिनी प्यासी, ज्यों प्यासे कौ नीर रे।

इस प्रकार कबीरदास ने निर्गुण निराकर और निर्विकार ब्रह्म की भक्ति पर ही बल दिया हैं परन्तु कहीं–कहीं वे सगुण भावनाओं का भी आश्रय ले लेते है।

2. **माया संबंधी दृष्टि कोण :**

कबीरदास ने अद्वैतवादियों से प्रभावित होकर माया को मिथ्या माना है। उन्होंने कहा की माया संसार में अज्ञान का अंधकार फैलाती है। इसलिए इसे उन्होनें पापिनी, विश्वासघातिनी, मोहिनी, सांपिणी, ठगिणी, डाकिनी आदि कहा है। आत्मा संसार में आकर इसी के जाल में फँसती है। सृष्टि के सारे संबंध माया–जन्य हैं, समस्त सृष्टि मायामय है :–

"कबीर माया पापणी फंद लै बैठी हाटि,

सब जग तो फंधे पाड़या फासियां गया कबीरा काटि।।"

कनक और कामिनी माया के प्रधान प्रतीक हैं। कबीरदास जी ने माया को परिवर्तनशील माना है। वह उत्पन्न तथा नष्ट होती रहती है। इसी भ्रम का शिकार होने के कारण जीव ईश्वर से विमुख हो जाता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए इस माया रूपी ममता को त्यागना पड़ता है। इसी भाव को दृष्टिगत कर कबीरदास जी कहते हैं:–

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।

कबीरदास जी भक्तों को माया से बचने का उपाय बताते है :–

"औंधा घड़ा न जल में डूबे सूधा सूभर भरिया।

जाकौ यह जग घिन करि चालै, ना प्रसादि निस्तरिया।।"

3. **जगत संबंधी दृष्टि कोण : –**

कबीर दास ने अद्वैतवादियों के समान ब्रह्म को सत्य तथा जगत् को मिथ्या माना है। वे बार – बार संसार की सत्ता को नश्वर कहते हैं।

कबीर दास जी संसार को बाजीगर का खेल कहते हैं। उनके अनुसार यह भ्रामक है। सृष्टि के बारे में कबीर दास के विचार वेदांत तथा सांख्य दर्शनों से प्रभावित है। लेकिन एकाध स्थल पर वे सूफी तथा इस्लाम की धारा से भी प्रभावित दिखाई पड़ते है।

वे संसार के मिथ्या भाव को प्रकट करने के लिए उसे सेम्बल का फूल, आकाश निलिमा, धुआँ – धरोहर आदि कहते है। वे स्पष्ट घोषणा करते हैं : –

"यहूँ ऐसा संसार है, ज्यों सेम्बर का फुल,

दिन दस के व्यवहार में झूठै रंग न भूल।।"

4. **जीव तत्व संबंधी दृष्टि कोण : –**

कबीरदास जी परमतत्व को ही सर्वोपरि मानते हैं। कभी–कभी लगता है कि कबीर का ब्रह्म तथा आत्मा एक ही है। कुम्भ के रूपक द्वारा उन्होंने सिद्ध किया है कि आत्मा शरीर बद्ध होने के कारण ब्रह्म से भिन्न प्रतीत होने लगती है, पर यह अलग नहीं है:– कबीरदास जी आत्मा को कभी अमर मानते हैं तो कभी ब्रह्म के समान मानते हैं, क्योंकि ब्रह्म आनन्द स्वरूप है, अतः आत्मा भी आनन्द स्वरूप है। वे तो आत्मा–परमात्मा के अंश–अंशी संबंध को स्वीकार करते हैं।

सारांश :

निर्गुण धारा के संत कवि कबीर मुख्य रूप से एक भक्त कवि और साधक थे। उन्होंने ईश्वर और जीव के अद्वैत को स्वीकार किया है। माया की भूमिका को स्वीकार करने के साथ ही कबीर इस जगत की निस्सारता पर भी जोर देते हैं। उनका मानना है कि जीवन क्षणभंगुर है। वे परमात्मा से संबंध को ही एकमात्र सत्य मानते हैं। योग उनके लिए चित्रशुद्धि का साधन है। योग के साथ परमात्मा की प्राप्ति के लिए ज्ञान और प्रेम आवश्यक है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरू कृप्या आवश्यक है। गुरू ही साधक को सही मार्ग पर अग्रसर करता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर का दार्शनिक दृष्टिकोण वेदों, उपनिषदों आदि से प्रभावित है, जो विशुद्ध भारतीय है। इस पर किसी विदेशी विचारधारा का प्रभाव नहीं है। वे आत्मा–परमात्मा को एक मानते हुए अंश–अंशी का संबंध स्वीकार करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- कबीर : हजारी प्रसार द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कबीर ग्रंथावली : (सं॰) श्यामसुंदर दास, लोक–भारती प्रकाशन, इलाहबाद।
- भारतीय चिंतन परंपरा : डॉ॰ के॰ दामोदरन।
- कबीर वाणी : डॉ॰ पारस नाथ तिवारी
- कबीर एक नयी दृष्टि : रघुवंश, लोक भारती–प्रकाशन, इलाहाबाद।
- विचार–विमर्श : चन्द्रबली पांडे, हिन्दी–साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।